मूर्ख कछुआ

बहुत समय पहले की बात है। एक कछुआ था, जो किसी गांव में एक तालाब में रहता था। उसकी मित्रता दो बगुलों से थी। तीनों दोस्त एक साथ खूब मज़ा किया करते थे।

एक बार उनके गांव में बारिश नहीं हुई, जिस कारण वहां भयंकर सूखा पड़ा। नदी व तालाब सूखने लगे, खेत मुरझा गये। आदमी व पशु-पक्षी सब प्यास से मरने लगे। वह सब अपनी जान बचाने के लिये गावं छोड़कर दूसरे स्थानों पर जाने लगे।

बगुलों ने भी अन्य पक्षियों के साथ दूसरे जगह जाने का फैसला लिया। जाने से पूर्व वह अपने मित्र कछुए से मिलने गये। उनके जाने की बात सुनकर कछुए ने उनसे उसे भी अपने साथ ले चलने के लिए कहा। इस पर बगुलों ने कहा कि वह भी उसे वहां छोड़कर नहीं जाना चहाते, परन्तु मुशकिल यह है कि कछुआ उड़ नहीं सकता और वह उड़ कर कहीं भी जा सकते है।

उनकी बात सुनकर कछुआ बोला, कि यह सच है कि वह उड़ नहीं सकता। परन्तु उसके पास इस समस्या का हल है। कछुए की बात सुनकर बगुलों ने उससे तरीका पूछा।

कछुआ बोला, " तुम एक मज़बूत ड़डी ले आओ। उस ड़डी के दोनो कोनों को तुम अपनी-अपनी चोंच से पकड़ लेना और मैं उस ड़डी को बीच में से पकड़कर लटक जाऊंगा। इस प्रकार मैं भी तुम्हारे साथ जा सकूँगा और हम अपनी जान बचा सकेंगे।"

बगुलों को कछुए की बात पसंद आ गई और वह वहां से चलने की तैयारी करने लगे। चलने से पहले बगुलों ने कछुए को सावधान किया कि वह उसे साथ ले तो जा रहे है परन्तु हमारी एक शर्त कि तुम सारे रास्ते अपना मुहं नहीं खोलोगे। कछुए को बहुत बात करने की आदत थी। उसके लिये चुप रहना बहुत मुशकिल कार्य था। बगुले कछुए से आगे बोले, " यदि तुमने गलती से भी मुँह खोला तो तुम नीचे गिरकर मर जाओगे।"

इस पर कछुआ बोला, कि " मैं कभी भी ऐसी मूर्खता नहीं करूंगा।"

बगुलों ने ड़डी के दोनों किनारो को अपनी-अपनी चोंच में दबा लिया। कछुआ ड़डी को अपने मुंह से पकड़ कर बीच में लटक गया और बगुले उसे लेकर उड़ने लगे।

वह तीनों आकाश में ऊंचे उड़ते गये। काफी समय तक उड़ने के बाद वह एक नगर के ऊपर से निकल रहे थे तो उनको देखने के लिये सड़को पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। किसी ने भी ऐसा नज़ारा पहले कभी नही देखा था। वह लोग जोर-जोर से ताली बजाने और शोर मचाने लगे।

लोगों को इस तरह से शोर मचाते व ताली बजाते देख कछुए को बहुत क्रोध आया। उससे बिना बोले नहीं रहा गया। वह बगुलों द्धारा चुप रहने की बात भूल गया और जैसे ही कछुए ने बोलने के लिये मुंह खोला, वह धड़ाम से नीचे जा गिरा और मर गया।

समाप्त

शेर और चूहा

एक बार एक शेर अपनी गुफा में सो रहा था । तभी एक चूहा कहीं से आकर शेर के ऊपर कूदने लगा । जिससे शेर की नींद टूट गयी । शेर को चूहे पर इतनी ज़ोर से गुस्सा आया कि उसने उसे अपने पंजों में जकड़ लिया और उसे मारने का सोचने लगा। चूहा बहुत डर गया। उसने काँपते हुए शेर से कहा – "हे शेर राजा ! मुझे माफ कर दिजिये, मुझ से बहुत भारी भूल हो गई । अगर आप मुझे जाने देगें तो आप का बहुत उपकार होगा और आपके इस उपकार को मैं वक्त आने पर जरूर चुका दूँगा।" यह सुनकर शेर को चूहे पर दया आ गई और उसने उसे जाने दिया । पर वह मन ही मन हँसा कि भला यह छोटा सा चूहा मेरा उपकार क्या चुकाएगा ।

समय बीतता गया ओर एक दिन हमेशा की तरह शेर शिकार की तलाश में जंगल में घूम रहा था कि एक शिकारी ने उसे चलाकी से अपने जाल में पकड़ लिया। शेर अपनी सहायता के लिए जोर-जोर से दहाड़ मारने लगा । शेर की अवाज सुनकर चूहा वहाँ आया । शेर को जाल में फँसा देखकर उसने तुरन्त अपने नुकीले दाँतों से शिकारी का जाल काट दिया और शेर को आज़ाद कर दिया । शेर ने चूहे का बहुत धन्यवाद किया । उस दिन शेर को समझ आया कि किसी भी प्राणी की काबलीयत उसके भारी रूप से नहीं लगानी चाहिए और कभी छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं करना चाहिए । हमेशा सबकी मदद करनी चाहिए क्योकिं जो दूसरों की मदद करता है, उसकी भी सब मदद करते हैं ।

बोलती गुफा

एक भूखा शेर शिकार की खोज में जंगल में घूम रहा था।

घूमते-घूमते वो थक गया। उसकी भूख भी बढ़ गई। अकस्मात् उसे एक गुफा नज़र आई। शेर ने सोचा कि इस गुफा में ज़रूर कोई जानवर रहता होगा। अच्छा हो मैं उस झाड़ी में छिप जाऊं। ज्यों ही वह निकलेगा मैं उसे धर दबोचूंगा।

शेर ने काफी देर तक गुफा के बाहर इंतज़ार किया, मगर कोई भी जानवर वहाँ से बाहर नहीं आया। तब शेर ने सोचा कि लगता है वह जानवर इस वक्त गुफा में ना होकर कहीं बाहर गया है। इस लिये उसे गुफा के अन्दर जाकर उसका इंतज़ार करना चाहिए। जैसे ही वह गुफा के अन्दर आएगा वह उसे खा जाएगा।

ऐसा सोचकर शेर गुफा के अन्दर जाकर छिप गया।

क्रमशः

उस गुफा में एक गीदड़ रहता था। थोड़ी देर बाद वह वापस आया तो उसे गुफा के बाहर किसी के पैरों के निशान दिखाई दिये। उसे यह निशान किसी बड़े एवं खतरनाक जानवर के प्रतीत हुए। उसे किसी खतरे का एहसास हुआ।

गीदड़ बहुत चालाक और सयाना था। उसने सोचा कि गुफा में जाने से पहले देखे मामला क्या है। उसने जोर से गुफा को आवाज़ लगाई – "गुफा ! ओ गुफा !" लेकिन जवाब कौन देता?

गीदड़ ने फिर आवाज़ लगाई, "अरे मेरी गुफा, तू जवाब क्यों नही देती ? आज तुझे क्या हो गया ? हमेशा मेरे लौटने पर तू मेरा स्वागत करती है। आज क्या हो गया। अगर तूने जवाब न दिया तो मैं किसी दूसरी गुफा में चला जाऊंगा।"

गीदड़ की बात सुनकर शेर ने सोचा कि यह गुफा तो बोलकर गीदड़ का स्वागत करती है। आज मेरे यहां होने की वजह से शायद डर गई है। अगर गीदड़ का स्वागत नहीं किया तो वह चला जाएगा।

ऐसा विचार कर शेर अपनी भारी आवाज़ में जोर से बोला – "आओ, आओ मेरे दोस्त, तुम्हारा स्वागत है।"

शेर की आवाज़ सुनकर गीदड़ वहां से भाग गया।

चालाक बन्दर

किसी नदी के किनारे एक बहुत बड़ा पेड़ था । उस पर एक बन्दर रहता था । उस पेड़ पर बड़े मीठे फल लगते थे । बन्दर उन्हे भरपेट खाता और मौज उड़ाता । वह अकेले ही मजे में दिन गुजार रहा था ।

एक दिन एक मगर उस नदी में से पेड़ के नीचे आया । बन्दर के पूछने पर मगर ने बताया की वह वहाँ खाने की तलाश में आया है । इस पर बन्दर ने पेड़ से तोड़कर बहुत से मीठे फल मगर को खाने के लिए दिए। इस तरह बन्दर और मगर में दोस्ती हो गई । अब मगर हर रोज़ वहाँ आता और दोनों मिलकर खूब फल खाते । बन्दर भी एक दोस्त पाकर बहुत खुश था ।

एक दिन बात-बात में मगर ने बन्दर को बताया की उसकी एक पत्नी है जो नदी के उस पार उनके घर में रहती है । तब बन्दर ने उस दिन बहुत से मीठे फल मगर को उसकी पत्नी के लिए साथ ले जाने के लिए दिए ।

इस तरह मगर रोज़ जी भरकर फल खाता और अपनी पत्नी के लिए भी लेकर जाता। मगर की पत्नी को फल खाना तो अच्छा लगता पर पति का देर से घर लौटना पसन्द नहीं था । एक दिन मगर की पत्नी ने मगर से कहा कि अगर वह बन्दर रोज-रोज इतने मीठे फल खाता है तो उसका कलेजा कितना मीठा होगा । मैं उसका कलेजा खाऊँगी। मगर ने उसे बहुत समझाया पर वह नहीं मानी ।

मगरमच्छ दावत के बहाने बन्दर को अपनी पीठ पर बैठाकर अपने घर लाने लगा । नदी बीच में उसने बन्दर को अपनी पत्नी की कलेजे वाली बात बता दी । इस पर बन्दर ने कहा कि वो तो अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड़ आया हे । वह उसे हिफाजत से पेड़ पर रखता है। इसलिए उन्हे वापिस जाकर कलेजा लाना पड़ेगा । मगर बन्दर को वापिस पेड़ के पास ले गया । बन्दर छलांग मारकर पेड़ पर चढ़ गया । उसने हँसकर कहा कि- "जाओ मूर्खराजा, घर जाओ और अपनी पत्नी से कहना कि तुम दुनिया के सबसे बड़े मूर्ख हो । भला कोई भी अपना कलेजा निकालकर अलग रख सकता है ।"

बन्दर की इस समझदारी से हमे पता चलता है कि मुसीबत के वक्त हमें कभी धैर्य नहीं खोना चाहिए।